प्रकाशनार्थ समाचार दिनांक–26–2–2011

अयोध्या नगरी में भगवान ऋषभदेव के मूल जन्मस्थान पर जिनमंदिर की भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक सानंद सम्पन्न

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास के क्रम में शाश्वत तीर्थ अयोध्या में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के मूल जन्मस्थान पर टोंक जीर्णोद्धार एवं भव्य जिनमंदिर का निर्माण करके राष्ट्रीय स्तर पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव का आयोजन सानंद सम्पन्न हुआ। उक्त प्रतिष्ठा महोत्सव पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के सान्निध्य में तथा कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन के निर्देशन में दिनाँक 14 फरवरी से 20 फरवरी 2011 तक आयोजित किया गया। महोत्सव का आयोजन दिगम्बर जैन बड़ी मूर्ति मंदिर के परिसर में बने विशाल पंडाल में हजारों भक्तों की भीड़ के मध्य सम्पन्न हुआ। महोत्सव में अनेक विशिष्ट महानुभावों का पदार्पण हुआ तथा अवध आदि क्षेत्र के विभिन्न स्थानों से पधारे लगभग 150 जोड़ों ने इन्द्र–इन्द्राणी के रूप में भाग लेकर पुण्य कमाया। सम्पूर्ण महोत्सव की सफलता में आर्यिका श्री अभयमती माताजी एवं आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

महोत्सव का शुभारंभ दिनाँक 14 फरवरी को प्रातः 8 बजे मंदिर एवं मूर्ति निर्माण के पुण्यार्जक श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ–लखनऊ के पौत्र श्री अध्यात्म जैन–अर्पिता जैन द्वारा झण्डारोहणपूर्वक किया गया। इस अवसर पर अन्य परिवारजन व समिति अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन, महामंत्री श्री सरोज कुमार जैन–तह. फतेहपुर, प्रबंध मंत्री–श्री पदमचंद जैन–त्रिलोकपुर, कोषाध्यक्ष–श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा.–टिकैतनगर आदि पदाधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर समस्त विधि–विधान को सम्पन्न करने हेतु प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन शास्त्री–जम्बूद्वीप, पं. विजय कुमार जैन–जम्बूद्वीप व पं. सतेन्द्र कुमार जैन–तिवरी को आचार्य निमंत्रण दिया गया। पुनः 15 फरवरी को यागमण्डल विधान आदि अनुष्ठान सम्पन्न हुए तथा 16 फरवरी से 20 फरवरी तक क्रमशः भगवान का गर्भकल्याणक, जन्मकल्याणक, दीक्षाकल्याणक, केवलज्ञानकल्याणक, मोक्षकल्याणक भारी उत्सव के साथ मनाया गया।

मुख्यरूप से दिनांक 17 फरवरी को मध्यान्ह में भगवान के जन्मकल्याणक अवसर पर पंडाल से ऐरावत हाथी पर तीर्थंकर बालक को बैठाकर विशाल जुलूस निकाला गया। यह जुलूस पंडाल से प्रारंभ होकर भगवान ऋषभदेव के मूल जन्मस्थान टोंक व नवनिर्मित मंदिर से होते हुए 5 किमी. की दूरी पर कटरा मोहल्ले में स्थित पांडुकशिला परिसर में पहुंचा, जहाँ सौधर्म आदि समस्त इन्द्र–इन्द्राणियों ने भगवान का 1008 कलशों से जन्माभिषेक किया। अयोध्या के जैन इतिहास में इतना विशाल जुलूस प्रथम बार निकाला गया, जिसमें अनेक बैण्ड–बाजों, ऐरावत हाथी व घोड़ों के साथ अनेक बघ्घियों पर इन्द्र–इन्द्राणीगण व सैकड़ों भक्तजन पैदल उपस्थित हुए। इस दिन रात्रि में जैनधर्म प्रवर्धिनी सभा–लखनऊ का अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसमें सभा के अध्यक्ष श्री विनय कुमार जैन–लखनऊ को समिति द्वारा अभिनंदन पत्र प्रदान करते हुए विशेष सम्मानित किया गया।

शिलान्यास–दिनाँक 18 फरवरी को मध्यान्ह में सरयू नदी के तट पर स्थित भगवान अनंतनाथ के वास्तविक जन्मस्थल (टोंक) पर टोंक जीर्णोद्धार व जिनमंदिर के निर्माण हेतु शिलान्यास किया गया। उक्त शिलान्यास समस्त अनुष्ठानपूर्वक श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा. व पुत्रगण श्री

अमरचंद जैन, नेमचंद जैन, हेमचंद जैन–टिकैतनगर परिवार के द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रतिष्ठाचार्यों के साथ पं. प्रवीणचंद जैन शास्त्री–जम्बूद्वीप व पं. प्रदीप कुमार जैन शास्त्री–जम्बूद्वीप ने भी समस्त विधि–विधान में सहयोग प्रदान किया। इसी दिन रात्रि में अयोध्या के प्रतिष्ठित संत–महंतों का सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें श्री महंत धर्मदास जी महाराज, श्री कमलनयन दास जी महाराज, श्री कौशल किशोर दास जी महाराज, श्री सिया किशोरी शरण जी महाराज, श्री महांत रामकृपाल दास जी महाराज आदि उपस्थित हुए। समस्त संतों ने भगवान ऋषभदेव के जीवन वृत्त पर महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किये एवं समिति द्वारा सभी को सम्मानित किया गया।

दिनांक 19 फरवरी को रात्रि प्रसिद्ध गीतकार श्री रूपेश जैन–इंदौर द्वारा भव्य सांस्कृतिक संध्या प्रस्तुत की गई व 20 फरवरी को मोक्षकल्याणक के उपरांत प्रातः 8 बजे प्राचीन मंदिर में स्थित 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर पुण्यशाली भक्तों द्वारा भगवान का प्रथम कलश, इक्षुरस, नारियल रस, संतरा रस, अंगूर रस, घी, दूध, दही, केशर, चंदन आदि से भव्य पंचामृताभिषेक सम्पन्न हुआ। महामस्तकाभिषेक महोत्सव का सीधा प्रसारण आस्था चैनल के माध्यम से सारे देश–विदेश में प्रसारित किया गया, जिसे करोड़ों भक्तों ने देखकर पुण्य अर्जित किया।

इस दिन मध्यान्ह में भगवान ऋषभदेव के मूल जन्मस्थान पर निर्मित नूतन जिनमंदिर में भगवान का महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। उक्त मस्तकाभिषेक महोत्सव के यज्ञनायक व मंदिर–मूर्ति के निर्माता श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ–लखनऊ, भगवान के माता–पिता श्री कैलाशचंद जैन–सरोजनी जैन–बहराइच, सौधर्म इन्द्र श्री आदीश कुमार जैन–स्मृति जैन, ईशान इन्द्र श्री अध्यात्म जैन–अर्पिता जैन, सानत्कुमार इन्द्र श्री विकास जैन–अंजू जैन, धनकुबेर श्री सिद्धार्थ जैन–दीप्ति जैन, इन्द्र–इन्द्राणी श्री सुभाषचंद जैन–सुषमा जैन, श्री वीर कुमार जैन, श्री शुभचंद जैन, ब्र. कु. मंजू जैन, श्रीमती बीना, ब्र. कु. इन्दू जैन जैन आदि महानुभावों द्वारा किया गया। इस अवसर पर मध्यान्हकाल में मंदिर के शिखर पर कलश व ध्वजारोहण भी श्री कैलाशचंद जैन परिवार ने करके महोत्सव को सानंद सम्पन्न किया। समापन अवसर पर समिति द्वारा मंदिर व मूर्ति निर्माण के पुण्यार्जक श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ को ''दानवीर श्रावक शिरोमणि'' की उपाधि से अलंकृत करते हुए विशाल प्रशस्ति पत्र के साथ विशेष सम्मानित किया तथा प्रमुख पात्रों में माता–पिता, सौधर्म इन्द्र, ईशान ईन्द व धनकुबेर को भी अभिनंदन पत्र के साथ सम्मानित किया गया।

सम्पूर्ण महोत्सव में आराधना महिला मण्डल–बेलगांव, कर्नाटक की सदस्याओं ने सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये तथा मुख्य कलाकार भूरीलाल भास्कर–उदयपुर व संगीतकार हरीश कुमार एण्ड पार्टी–भरतपुर ने महोत्सव को आकर्षण प्रदान किया। अन्य गतिविधियों में सहयोग हेतु जैन हेल्प लाइन–लखनऊ, वीर सेवा दल महाराष्ट्र, श्री सपन जैन एण्ड टीम–इलाहाबाद, श्री शुभचंद जैन एण्ड टीम–टिकैतनगर, श्री संजीव जैन, राकेश जैन व प्रवीण जैन–लखनऊ, जम्बूद्वीप व अयोध्या स्टाफ आदि का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

विशेषरूप से पूज्य माताजी की संघस्थ शिष्याएं ब्र. कु. बीना जैन, ब्र. कु. स्वाति जैन, ब्र. कु. सारिका जैन, ब्र. कु. मंजू जैन, ब्र. कु. इन्दू जैन ने कार्यक्रम की सफलता में सहयोग प्रदान किया। पारस चैनल के सीधे प्रसारण का संयोजन कुशलता के साथ ब्र. कु. स्वाति जैन द्वारा किया गया।

सम्पूर्ण महोत्सव का सीधा प्रसारण पारस चैनल के माध्यम से प्रातः, मध्यान्ह व रात्रि में तीनों समय लगातार 5 दिनों तक दिनांक 16 से 20 फरवरी तक किया गया, जिसे सारे देश की जैन समाज ने देखकर पुण्य अर्जित किया व सैकड़ों टेलीफोन के माध्यम से व्यवस्थित कार्यक्रम की प्रशंसा भी की।

—जीवन प्रकाश जैन
प्रचार संयोजक

फोटो कैप्सन—

फोटो नं. 1
भगवान ऋषभदेव मूल जन्मस्थान अयोध्या में नवनिर्मित जिनालय में जन्मकल्याणक अवसर पर वस्त्राभरणों से सहित भगवान का सुन्दर स्वरूप—17 फरवरी 2011।

फोटो नं. 2
भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या में पंचकल्याणक के अवसर पर भगवान के आहार का दृश्य—19 फरवरी 2011।

फोटो नं. 3
भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या में पंचकल्याणक के अवसर पर आयोजित संत सम्मेलन में मंचासीन संतगण—18 फरवरी 2011।

फोटो नं. 4
भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या में तीर्थ पर विराजमान 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का सर्वोषधि से महामस्तकाभिषेक करते भक्तजन।

फोटो नं. 5
भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या में तीर्थ पर विराजमान 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का हरिद्रा से महामस्तकाभिषेक करते भक्तजन।

फोटो नं. 6
भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या में तीर्थ पर विराजमान 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का दूध से महामस्तकाभिषेक करते भक्तजन।

फोटो नं. 7
भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि अयोध्या में तीर्थ पर विराजमान 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का दही से महामस्तकाभिषेक करते भक्तजन।

फोटो नं. 8
भगवान ऋषभदेव मूल जन्मस्थान अयोध्या में नवनिर्मित जिनालय में हरिद्रा से भगवान का महामस्तकाभिषेक करते भक्तजन।

फोटो नं. 9
भगवान ऋषभदेव मूल जन्मस्थान अयोध्या में नवनिर्मित जिनालय में दूध से भगवान का महामस्तकाभिषेक करते भक्तजन।

फोटो नं. 10
भगवान ऋषभदेव मूल जन्मस्थान अयोध्या में नवनिर्मित जिनालय में महामस्तकाभिषेक के अवसर पर भगवान की शांतिधारा करते भक्तजन।

फोटो नं. 11
भगवान ऋषभदेव मूल जन्मस्थान अयोध्या में नवनिर्मित जिनालय में जल से भगवान का महामस्तकाभिषेक करते भक्तजन।

फोटो नं. 12

भगवान ऋषभदेव मूल जन्मस्थान अयोध्या में नूतन जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमा के पुण्यार्जक श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ–लखनऊ परिवार का सम्मान करते समिति के पदाधिकारीगण।